ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न क्वेयं यथा त्वम्।

– सामवेद 203

हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।
O God ! Verily there is none like you.
You are matchless.

वर्ष 42, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 सितम्बर, 2019 से रविवार 8 सितम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सरकार द्वारा पूर्वोत्तर राज्य असम मे एन.आर.सी. लागू करने का मामला

असम में राष्ट्रीय नागरिक पंजीकरण (NRC): लम्बा है इसका इतिहास

असम देश का इकलौता राज्य है, जहां राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर लागू किया जा रहा है। इसे ऐसे भी समझ सकते है कि असम में रह रहे भारतीय नागरिकों की एक लिस्ट है और असम में अवैध तरीके से घुस आए बंगलादेशियों के खिलाफ लंबे जनांदोलन का नतीजा है। अगर इस पूरी प्रक्रिया को देखें तो एक लम्बा इतिहास इससे जुड़ा हुआ है। असल में आजादी के बाद 1951 में पहली बार असम में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन बना था। लेकिन इससे पहले की कहानी भी इस रजिस्टर से जुडी है। दरअसल 1905 में जब अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया, तब पूर्वी बंगाल और असम के रूप में एक नया प्रांत बनाया गया था, तब असम को पूर्वी बंगाल से जोड़ा गया था। लेकिन जब देश का बंटवारा हुआ तो ये डर भी पैदा हो गया था कि कहीं ये पूर्वी पाकिस्तान के साथ जोड़कर भारत से अलग न कर दिया जाए।

- जारी पृष्ठ 3 पर

चन्द्रयान -2 की सफल यात्रा

7 सितम्बर को चाँद पर उतरने की सम्भावना

आर्यसमाज की ओर से सुयोग्य वैज्ञानिकों और समस्त देशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं

बचपन से हम सुनते आ रहे है-
चंदा मामा दूर के, पुए पकाए बूर के आप खाए थाली में, मुन्ने को दें प्याली में

लेकिन अब चंदा मामा दूर के, की बात नहीं रह गई है। यह सर्व विदित है कि 22 जलाई 2019 को आन्ध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस से चंद्रयान-की लांचिंग हुई थी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए चंद्रयान-2 को चंद्रमा की कक्षा में 20 अगस्त 2019 मंगलवार को सफलतापूर्वक प्रवेश करवा दिया। अंतरिक्ष एजेंसी के बेंगलुरु मुख्यालय ने एक बयान में कहा कि 'लूनर ऑर्बिट इंसर्शन' (एलओआई) प्रक्रिया सुबह नौ बजकर दो मिनट पर सफलतापूर्वक पूरी हुई। प्रणोदन प्रणाली के जरिए इसे संपन्न किया गया। इसरो ने कहा, 'यह पूरी प्रक्रिया 1,738 सेकेंड की थी।

- जारी पृष्ठ 4 एवं 6 पर

23वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

दर्जनों युवक-युवतियों ने कराया पंजीकरण : देश के कई राज्यों के युवक-युवतियों ने लिया सम्मेलन में भाग

आजकल अपने युवा बच्चों के विवाह को लेकर अधिकांशतया: लोग चिंतित रहते हैं। आर्य परिवारों की इस समस्या का समाधान करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 23वां आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन अत्यंत प्रेम और सौहार्द के वातावरण में संपन्न हुआ। 1 सितंबर 2019 को 23 वें आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज आदर्श नगर, सुशीला रोड़ दिल्ली के प्रांगण में किया गयाा। सम्मेलन का शुभारंभ ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासन मंत्रों के उच्चारण से हुआ। तदोपरांत स्वामी विवेकानंद परिव्राजक जी के नेतृत्व में द्वीप प्रज्ज्वलन हुआ। जिसमें श्री अर्जुन देव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक, श्री रवीन्द्र बत्तरा, इस कार्यक्रम के अध्यक्ष व समाज के प्रधान, श्री प्रवीण बत्तरा, मंत्री, श्री देवेन्द्र जावा, कोषाध्यक्ष, श्री संजय सोनी उपप्रधान आर्य समाज आदर्श नगर, श्रीमती वीना आर्या संयोजक, श्रीमती पुष्पा महावर, श्री दिनेश कुमार सिंह , सह-संयोजक सार्वदेशिक आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश, श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री राकेश चड्डा जी, आर्य समाज कोटा,

- जारी पृष्ठ 8 पर

23वें आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन में पधारे युवक-युवतियों के साथ राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्डा, श्री सतीश चड्डा, आर्यसमाज आदर्श नगर के प्रधान श्री रविन्द्र बत्रा एवं अधिकारीगण, श्रीमती वीना आर्या, श्री कंवरभान खेत्रपाल जी एवं परिचय सम्मेलन में पधारे आर्य परिवार।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक परियोजना के अन्तर्गत

60 दिवसीय धर्म प्रचारक प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ : 8 सितम्बर को होगा प्रथम चरण का समापन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव आर्य समाज के उत्थान और विस्तार के लिए प्रयास रत रहने वाली संस्था है। वर्तमान में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पूरे देश के कोने-कोने में और विदेशों में भी समस्त आर्य जगत को महसूस हो रही है। चारों तरफ देश की भोली-भाली जनता धर्म के नाम पर डर और प्रलोभन का शिकार होकर दु:ख, पीड़ा और संताप का ग्रास बन रही है। इस झूठे ढ़ोंग पाखंड़ और गुरुडम के खिलाफ आर्य समाज सदैव अपनी आवाज बुलंद गकरता रहा है। आधुनिक परिवेश में केवल वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं का आर्यसमाजों की परिधि में वर्णन करने से कार्य चलने वाला नहीं है, क्योंकि संपूर्ण विश्व में अनेक अन्य संस्थाएं, संगठन अपने अपने मत और

- जारी पृष्ठ 6 पर

वैदिक धर्म प्रचारक प्रशिक्षण शिविर में यज्ञ करते प्रशिक्षु एवं सैद्धान्तिक शिक्षा देते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी

वेद-स्वाध्याय

देवों की निवाभूमि

तस्माद् वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते।
सर्वा ह्य स्मिन् देवता गावो गोष्ठइवासते।। - अथर्व० 11/8/32
ऋषिः **कौरूपथिः**।। देवता - **अध्यात्मं, मन्युः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **तस्मात्** = इसी कारण **वै** = ही **विद्वान्** = ज्ञानी लोग **पुरुषम्** = इस पुरुष को **इदं ब्रह्म इति** = 'यह ब्रह्म है' ऐसा **मन्यते** = मानते हैं, क्योंकि **अस्मिन्** = इस पुरुष-देह में **सर्वा हि देवताः** = सब-की-सब देवताएँ **गावः गोष्ठे इव** = जिस प्रकार गोशाला में गौएँ बैठी होती हैं उसी तरह **आसते** = आ विराजी हुई हैं।

विनय- सब ज्ञानी लोग कहते हैं कि यह पुरुष ब्रह्म है। क्या तुम जानते हो कि वे ऐसा क्यों कहते हैं? इसका कारण यह है कि सब-के-सब देवता हमारे शरीर में आये हुए हैं और सब देवों का देव परमदेव परमेश्वर भी हमारे अन्दर है। सूर्य, वायु, अग्नि आदि सब देव हमारे शरीर में ऐसे अपना घर बनाकर आ बैठे हैं जैसे अपने गोष्ठ में, गोशाला में गौएँ यथास्थान बैठी हुई होती हैं। सचमुच हमारा देह देवों का घर बना हुआ है। सूर्य देवता हमारे चक्षु को, ज्ञान को, ज्ञान के विस्तृत कोष को अधिकृत करके आ बैठा है और उसके साथ सम्पूर्ण द्युलोक और उसके सब देवता समाये हुए हैं। वायु देवता हमारे प्राण में मनसहित हमारे प्राणशरीर में ठहरा हुआ है और उसके साथ सम्पूर्ण अन्तरिक्षलोक और अन्तरिक्ष के सब देव आये हुए हैं। अग्नि देवता हमारे शेष स्थूल शरीर को सँभालकर बैठा हुआ है और उसके साथ समस्त पृथिवीलोक तथा पृथिवी के सब देव विराजे हुए हैं। इस तरह यह सब त्रिलोकी, त्रिलोकी के सब भुवन और भुवनों के सब-के-सब तैंतीस, तीन सौ तीन या तीन हज़ार तीन देवता इस शरीर में आये हुए हैं। सचमुच सब ब्रह्माण्ड ही इस पिण्ड में है। इसमें आश्चर्य ही क्या है? जब वह परमदेव हमारे अन्दर है तो उसकी सम्पूर्ण विभूति, उसका सम्पूर्ण विश्व क्यों न हमारे अन्दर होगा? वास्तव में सब-कुछ हमारे अन्दर ही है और मनुष्य को जब भी कभी सब-कुछ की प्राप्ति होगी तो अपने अन्दर से ही होगी। बाहर कुछ नहीं है। बाहर तो केवल हमारे अन्दर की छायामात्र है, अस्थिर छायामात्र है। इसलिए हे मनुष्य! जिस दिन इस परम सत्य का साक्षात्कार तुझे हो जाएगा तो निश्चय से तू भी बोल उठेगा 'इदं ब्रह्म'। पुरुष के विषय में कहने लगेगा 'यह ब्रह्म है, यह ब्रह्म है'।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पश्चिम बंगाल में भी हो राष्ट्रीय नागरिक पंजीकरण (एन.आर.सी.)

भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम में नेशनल सिटिजन रजिस्टर यानी एनआरसी की आखरी लिस्ट जारी हो चुकी है। लिस्ट के अनुसार अंतिम सूची में 19 लाख 6 हजार 657 लोग बाहर हैं। इसमें वे लोग भी शामिल हैं, जिन्होंने कोई दावा पेश नहीं किया था। 3 करोड़ 11 लाख 21 हजार 4 लोगों को वैध करार दिया गया है। अगर कोई लिस्ट से सहमत नहीं है तो वह अपील कर सकता है।

ज्ञात हो पिछले साल 21 जुलाई को जारी की गयी एनआरसी सूची में 3.29 करोड़ लोगों में से 40.37 लाख लोगों का नाम शामिल नहीं था। अंतिम सूची में उन लोगों के नाम शामिल किए गए हैं, जो 25 मार्च 1971 से पहले असम के नागरिक हैं या उनके पूर्वज राज्य में रहते आए हैं।

असम के राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर सूची जारी होने के बाद बात अब बहुत आगे निकलती दिख रही है। बंगाल में भाजपा नेताओं के बयानों से साफ है कि पार्टी इसे सिर्फ असम तक ही सीमित रखना नहीं चाहती। असम की तर्ज पर ही इसे बंगाल में भी लाया जा सकता है। लेकिन ममता बनर्जी समेत कई दलों के नेता बंगाल में एनआरसी के विरोध में खड़े होकर इसे हिन्दू-मुस्लिम मुद्दा बनाना शुरू कर दिया है। नतीजा असम और बंगाल से बहुत दूर दिल्ली में इस सच्चाई की पड़ताल को गैर जरुरी बनाकर मुस्लिमों को पीड़ित बनाकर पेश किया जा रहा है। जबकि एनआरसी न मुस्लिम विरोधी है और न बंगाली विरोधी है। एनआरसी लागू करने का सीधा सा कारण ये है कि जो लोग बाहर से आकर भारत में बसे हैं उन्हें गरीब भारतीय नागरिकों मिलने वाली सुविधाओं और अधिकारों से अलग रखा जाये। क्योंकि एक तो पहले से ही वो इस देश के नागरिक नहीं है दूसरा वे लोग सरकार और सरकारी संसाधनों पर बोझ बनते जा रहे हैं।

दूसरा बांग्लादेशियों के देश में बिना रोकटोक और कई जगहों पर खुली सीमा होने के कारण घुसपैठ से पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती जिले मुस्लिम बहुल हो गए हैं और इन प्रांतों का जनसंख्या संतुलन बिगड़ता जा रहा है। बंगलादेशी घुसपैठियों की दिनोंदिन हो रही बढ़ोतरी का बड़ा असर यह होने लगा है कि आम लोगों के मन में यह आशंका घर करने लगी है कि पश्चिम बंगाल देर-सबेर मुस्लिम बहुल राज्य के तौर पर जाना जाने लगेगा।

साल 2011 में हुई जनगणना को देखें तो पश्चिम बंगाल में मुस्लिम आबादी 2001 में 25 प्रतिशत थी, जो 2011 में बढ़कर 27 प्रतिशत हो गई थी। ये आंकड़े 2011 के हैं जबकि आज 2019 चल रहा है। इसी का नतीजा हैं पिछले कुछ समय में भारत-बांग्लादेश के सीमावर्ती इलाकों से घुसपैठियों द्वारा हिन्दुओं को मार-मारकर भगाया जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बांग्लादेश की सीमा से सटे प. बंगाल, असम के अधिकतर क्षेत्रों का राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिदृश्य बदल गया है।

24 परगना, मुर्शिदाबाद, वीरभूम, मालदा आदि ऐसे कई उदाहरण सामने हैं। हालात तब ज्यादा बिगड़ने लगे हैं आंकड़ों और खबरों से ही पता चलता है कि पश्चिम बंगाल में क्या चल रहा है? 2013 में बंगाल में हुए सुनियोजित दंगों में सैकड़ों हिंदुओं के घर और दुकानें लुटी गयी थी। साथ ही कई मंदिरों को तोड़ दिया गया था। बंगाल के 3 जिले ऐसे हैं, जहां पर मुस्लिमों ने हिन्दुओं की जनसंख्या को फसाद और दंगे के माध्यम से पलायन के लिए मजबूर किया। 2011 की जनगणना के अनुसार में मुर्शिदाबाद में 47 लाख मुस्लिम और 23 लाख हिन्दू, मालदा में 20 लाख मुस्लिम और 19 लाख हिन्दू और उत्तरी दिनाजपुर में 15 लाख मुस्लिम और 14 लाख हिन्दू हैं। जबकि हिन्दू यहां कभी बहुसंख्यक हुआ करते थे। प. बंगाल के सीमावर्ती उपजिलों की बात करें तो 42 क्षेत्रों में से तीन क्षेत्रों में मुस्लिम 90 प्रतिशत से अधिक, सात क्षेत्रों

.....1951 की जनगणना में प. बंगाल की कुल जनसंख्या 2.63 करोड़ में मुसलमानों की आबादी लगभग 50 लाख थी, जो 2011 की जनगणना में बढ़कर 2.50 करोड़ हो गई। किन्तु पश्चिम बंगाल का एक बड़ा बुद्धिजीवी वर्ग और तमाम राजनीतिक पार्टियां चुप्पी साधे हुए हैं। इस मसले पर हमेशा से सब से ज्यादा मुखर भारत की एकमात्र राजनीतिक पार्टी भाजपा रही है। दोनों ही मोर्चे यानी राज्य और केंद्र में भाजपा यह मामला उठाती रही है। यही कारण है कि असम में एनआरसी लिस्ट जारी होने के बाद पश्चिम बंगाल में यह मामला जोर पकड़ रहा है।.....

में 80-90 प्रतिशत के बीच, ग्यारह में 70-80 प्रतिशत तक, आठ में 60-70 प्रतिशत और 13 क्षेत्रों में मुस्लिमों की जनसंख्या 50-60 प्रतिशत तक हो चुकी है।

आप खुद देखिये कि यह संख्या कैसे बढ़ी क्योंकि 1951 की जनगणना में प. बंगाल की कुल जनसंख्या 2.63 करोड़ में मुसलमानों की आबादी लगभग 50 लाख थी, जो 2011 की जनगणना में बढ़कर 2.50 करोड़ हो गई। किन्तु पश्चिम बंगाल का एक बड़ा बुद्धिजीवी वर्ग और तमाम राजनीतिक पार्टियां चुप्पी साधे हुए हैं। इस मसले पर हमेशा से सब से ज्यादा मुखर भारत की एकमात्र राजनीतिक पार्टी भाजपा रही है। दोनों ही मोर्चे यानी राज्य और केंद्र में भाजपा यह मामला उठाती रही है। यही कारण है कि असम में एनआरसी लिस्ट जारी होने के बाद पश्चिम बंगाल में यह मामला जोर पकड़ रहा है। इस मुद्दे पर एक बार फिर भाजपा और ममता आमने-सामने हैं।

दूसरी तरफ अगर बांग्लादेश के भीतर की बात करें तो संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछली जनगणना में बांग्लादेश से एक करोड़ लोग गायब हैं जो भारत के कई प्रदेशों के अलावा असम और पश्चिम बंगाल में घुसपैठ कर चुके है। इन घुसपैठियों के चोरी, लूटपाट, डकैती, हथियार एवं पशु तस्करी, जाली नोट एवं नशीली दवाओं के कारोबार जैसी आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने के कारण कानून व्यवस्था पर गंभीर खतरा पैदा होने से इंकार नहीं किया जा सकता। इसके अलावा बांग्लादेशी घुसपैठ आतंकवादी संगठनों एवं पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई की गतिविधियों के लिए एक हथियार के रूप में उभरकर देश की सुरक्षा के समक्ष खतरा पैदा कर रही है। मतलब साफ है, घुसपैठिए जो कि बांग्लादेश से आकर असम, पश्चिम बंगाल और दूसरे राज्यों की धार्मिक समीकरण को बदल रहे हैं उन्हें वोट देने के अधिकार से वंचित कर उन्हें एक आम नागरिक को मिलने वाली सारी सुविधाओं से वंचित किया जाए।

- सम्पादक

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

असम में राष्ट्रीय नागरिक पंजीकरण (NRC).....

तब भारत रत्न से सम्मानित गोपीनाथ बोर्डोली की अगुवाई में असम विद्रोह शुरू हुआ। असम अपनी रक्षा करने में सफल रहा और भारत से जुड़ गया। 1950 में असम देश का राज्य बना। ये रजिस्टर 1951 की जनगणना के बाद तैयार हुआ था और इसमें तब के असम के रहने वाले लोगों को शामिल किया गया था। लेकिन असल विवाद तब शुरू हुआ जब 1971 में तब के पूर्वी पाकिस्तान यानी आज के बांग्लादेश में उर्दू और बंगला भाषा विवाद को लेकर आपसी संघर्ष शुरू हो गया। उस समय पूर्वी पाकिस्तान में परिस्थितियां इतनी हिंसक हो गई कि वहां रहने वाले हिंदू और मुस्लिम दोनों ही तबकों की एक बड़ी आबादी ने भारत का रुख किया और करीब 10 लाख लोगों ने बांग्लादेश सीमा पार कर असम में शरण ली। हालांकि उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कहा था कि शरणार्थी चाहे किसी भी धर्म के हों उन्हें वापस जाना होगा।

हालांकि 16 दिसंबर 1971 को जब बांग्लादेश को एक स्वतंत्र देश घोषित कर दिया गया, उसके कुछ दिन के बाद वहां पर हिंसा में कमी आई। लेकिन फिर भी बड़े पैमाने पर बांग्लादेशियों का असम में आना जारी रहा और असम के लोगों कि भाषाई, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक समीकरण को बदल दिया।

लगातार कई वर्ष तक लोगों ने इसे झेला लेकिन जब बर्दास्त की सीमा पार होने लगी तब 1978 के आसपास एक शक्तिशाली आंदोलन का जन्म हुआ, जिसकी अगुवाई वहां के युवाओं और छात्रों ने की। ऑल असम स्टूडेंट यूनियन और ऑल असम गण संग्राम परिषद दो संगठन आंदोलन के तौर पर उभरे। 1978 में ही असम के मांगलोडी लोकसभा क्षेत्र के सांसद हीरा लाल पटवारी का निधन हो गया। इसके बाद वहां उपचुनाव की घोषणा हुई। इस दौरान चुनाव अधिकारी ने पाया कि बांग्लादेशियों के आने के कारण ही इस क्षेत्र में मतदाताओं की संख्या में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है। हालांकि स्थानीय विरोध को दरकिनार करते हुए सरकार ने इन सारे लोगों को वोटर लिस्ट में शामिल कर लिया।

केंद्रीय नेतृत्व के इस व्यवहार से स्थानीय लोगों में आक्रोश फैल गया। ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) और असम गण संग्राम परिषद के नेतृत्व में लोग सड़कों पर उतर गए। आंदोलन के नेताओं ने दावा किया कि राज्य की जनसंख्या का 31 से 34 प्रतिशत हिस्सा बाहर से आए लोगों का है। उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की कि वो असम की सीमाओं को सील करे, बाहरी लोगों की पहचान करे और उनका नाम वोटर लिस्ट से हटाया जाए। जब तक ऐसा नहीं होता है, असम में कोई चुनाव न करवाया जाए।

जब केंद्र सरकार ने 1983 में असम में विधानसभा चुनाव करवाने का फैसला लिया, तो आंदोलन से जुड़े संगठनों ने इसका बहिष्कार किया। हालांकि चुनाव हुए, लेकिन जिन क्षेत्रों में असमिया भाषी लोगों का बहुमत था, वहां तीन फीसदी से भी कम वोट पड़े। राज्य में आदिवासी, भाषाई और सांप्रदायिक पहचानों के नाम पर जबरदस्त हिंसा हुई जिसमें तीन हजार से भी ज्यादा लोग मारे गये। इस हिंसा में असम के मोरीगांव कस्बे के नेल्ली का जिक्र जरूरी है। बताया जाता है आंदोलन के दौरान फरवरी 1983 में हजारों आदिवासियों ने नेल्ली क्षेत्र के बांग्लाभाषी मुसलमानों के दर्जनों गांव को घेर लिया और सात घंटे के अंदर दो हजार से अधिक बांग्लादेशियों को मार दिया गया।

खैर चुनावों के बाद राज्य में कांग्रेस पार्टी की सरकार जरूर बनी, लेकिन इसे कोई लोकतांत्रिक वैधता हासिल नहीं थी। 1983 की हिंसा के बाद दोनों पक्षों में फिर से समझौता-वार्ता शुरू हुई। लंबे समय तक समझौता-वार्ता चलने के बावजूद आंदोलन के नेताओं और केंद्र सरकार के बीच कोई सहमति नहीं बन सकी, क्योंकि यह बहुत ही जटिल मुद्दा था। यह तय करना आसान नहीं था कि कौन 'बाहरी' या विदेशी है और ऐसे लोगों को कहां भेजा जाना चाहिए। इसी तरह 1984 में असम के सोलह संसदीय क्षेत्रों से 14 संसदीय क्षेत्रों में चुनाव नहीं हो पाया। लगातार आंदोलन होते रहे और कई बार इन आंदोलनों ने हिंसक रूप लिया।

हालांकि इस दौरान आंदोलनकारियों और केंद्र सरकार के बीच बातचीत चलती रही जिसके परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1985 को केंद्र की तत्कालीन राजीव गांधी सरकार और आंदोलन के नेताओं के बीच समझौता हुआ जिसे असम समझौते के नाम से जाना गया। 15 अगस्त 1985 को लाल किले के प्राचीर से राजीव गांधी ने अपने भाषण में असम समझौते की घोषणा की। इसके तहत 1951 से 1961 के बीच आये सभी लोगों को पूर्ण नागरिकता और वोट देने का अधिकार देने का फैसला किया गया। तय किया कि जो लोग 1971 के बाद असम में आये थे, उन्हें वापस भेज दिया जाएगा।

इसके बाद राज्य में चुनाव हुए असम गण परिषद ने चुनाव में विधानसभा की 126 में से 67 सीटें जीत लीं और उन्हें बहुमत मिल गया। इसके बाद प्रफुल्ल कुमार महंत को मुख्यमंत्री बनाया गया। इसके बाद सरकारें बनती और गिरती रही लेकिन एनआरसी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। 1999 में जब भाजपा सत्ता में आई तो असम में राजीव गांधी के साथ जो समझौता लागू हुआ था, उसकी समीक्षा का काम शुरू हुआ इसके लिए केंद्र सरकार की ओर से 20 लाख रुपये का फंड रखा गया और पांच लाख रुपये जारी भी कर दिए गए। हालांकि यह पहल ठंडे बस्ते में चली गई। लेकिन 5 मई 2005 को तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने फैसला लिया कि एनआरसी को अपडेट किया जाना चाहिए और इसकी प्रक्रिया शुरू हुई। लेकिन मुसलमान नेताओं के विरोध और राज्य के कुछ हिस्सों में हिंसा के बाद यह रोक दिया गया।

8 साल तक इतंजार करने के बाद साल 2013 में असम पब्लिक वर्क नाम के एनजीओ सहित कई अन्य संगठनों ने इस मुद्दे को लेकर सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दायर की। 2013 से 2017 तक के चार साल के दौरान असम के नागरिकों के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट में कुल 40 सुनवाइयां हुई, जिसके बाद नवंबर 2017 में असम सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से कहा था कि 31 दिसंबर 2017 तक एनआरसी को अपडेट कर देंगे। हालांकि बाद में इसमें और वक्त की मांग की गई। फिलहाल 2015 में सुप्रीम कोर्ट के निर्देश और निगरानी में यह काम शुरू हुआ और 2018 जुलाई में फाइनल ड्राफ्ट पेश किया गया। 40 लाख लोगों के नाम इस लिस्ट में नहीं थे। लोगों को दुबारा आवेदन करने को कहा गया। इस बार की लिस्ट में करीब 19 लाख लोग शामिल हैं। सूची से बाहर हुए लोगों पर सुप्रीम कोर्ट ने किसी तरह की सख्ती बरतने पर फिलहाल के लिए रोक लगाई है। अब देखना ये है जिन अवैध रूप से रह रहे लोगों के नाम इसमें शामिल नहीं हैं उनके साथ क्या किया जायेगा?

– *राजीव चौधरी*

.....असम सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से कहा था कि 31 दिसंबर 2017 तक एनआरसी को अपडेट कर देंगे। हालांकि बाद में इसमें और वक्त की मांग की गई। फिलहाल 2015 में सुप्रीम कोर्ट के निर्देश और निगरानी में यह काम शुरू हुआ और 2018 जुलाई में फाइनल ड्राफ्ट पेश किया गया। 40 लाख लोगों के नाम इस लिस्ट में नहीं थे। लोगों को दुबारा आवेदन करने को कहा गया। इस बार की लिस्ट में करीब 19 लाख लोग शामिल है। सूची से बाहर हुए लोगों पर सुप्रीम कोर्ट ने किसी तरह की सख्ती बरतने पर फिलहाल के लिए रोक लगाई है। अब देखना ये है जिन अवैध रूप से रह रहे लोगों के नाम इसमें शामिल नहीं है उनके साथ क्या किया जायेगा।.....

प्रेरक प्रसंग

इतना पवित्र चरित्र था उनका

जब डॉक्टर चिरंजीव आर्यसमाज के प्रधान थे, तब वे आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के मन्त्री भी थे। उन्हीं दिनों एक विश्वासघाती और चंचलवृत्ति के व्यक्ति ने एक पुस्तक प्रकाशित करके कई आर्यनेताओं पर मिथ्या आरोप लगाये। उसने डॉक्टर चिरंजीवजी के व्यक्तिगत जीवन पर विशेषरूप से कीचड़ उछाला। यह व्यक्ति पहले मुसलमान था। आर्य बनकर धर्मपाल नाम पाया। कई रंग बदले। अच्छा लेखक था पर था छलिया और दुष्प्रवृत्ति का व्यक्ति।

डॉक्टरजी का चरित्र उजला था। वे एक पूजनीय पुरुष थे! उन्होंने पंजाब प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बुलाकर कहा कि धर्मपाल ने मेरे चरित्र पर आक्षेप किये हैं, मैं न्यायालय में नहीं जाना चाहता। अन्तरंग सभा इस विषय में जाँच करके न्याय करे। यदि मैं दुराचारी हूँ तो सभा मुझे दण्ड दे, यदि धर्मपाल दोषी है तो उसे दण्डित किया जाए।

धर्मपाल बड़ा धूर्त्त था। सभा ने उससे उत्तर माँगा तो उसके पास आरोपों को प्रमाणित करने के लिए कुछ था ही नहीं। उसने कटिलतापूर्ण उत्तर दिया कि डॉक्टर सभा का मन्त्री है। वह शक्तिशाली व्यक्ति है। उसके विरुद्ध कहने का साहस ही कौन करेगा? इस बात का पता लगते ही डॉक्टरजी ने सभा के मन्त्री पद से त्यागपत्र दे दिया। अब धर्मपाल सारी सभा को गालियाँ देने लगा। सभा की अनुमति से डॉक्टरजी ने धर्मपाल पर मानहानि का अभियोग चला दिया। धर्मपाल ने इसे भी एक सुअवसर जाना अब वह डॉक्टरजी के निर्मल चरित्र पर और भी धूल उड़ा सकता था। उसने डॉक्टरजी से मतभेद रखनेवाले व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित किया परन्तु किसी ने भी उस पतित का साथ न दिया। ऐसे सब सज्जनों ने कहा कि व्यक्तिगत मतभेद हमारे डॉक्टरजी से कुछ भी क्यों न हों, परन्तु चारित्रिक दृष्टि से डॉक्टरजी बहुत ऊँचे व्यक्ति हैं।

ब्राह्मसमाज के एक नेता को भी साक्षी के लिए न्यायालय में बुलाया गया। न्यायाधीश ने उनसे डॉक्टरजी के चरित्र के विषय में पूछा तो उन्होंने कहा–

'यदि आवश्यकता हो तो मैं अपनी धर्मपत्नी अथवा अपनी पुत्री को डॉक्टरजी के कमरे में रातभर अकेले उन्हीं के पास छोड़ सकता हूँ।' न्यायालय ने कहा–'अब मुझे आपसे और कोई प्रश्न पूछने की आवश्यकता नहीं।' डॉक्टरजी न्यायालय में दोषमुक्त किये गये और उस पाजी को पाँच सौ रुपये का दण्ड दिया गया।

– *प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

7 सितम्बर 2019 को की सतह पर उतरने की सम्भावना

आर्यसमाज की ओर से सुयोग्य वैज्ञानिकों और देशवासियों को बधाई

इसके साथ ही चंद्रयान-2 चंद्रमा की कक्षा में सफलतापूर्वक प्रवेश कर गया।' इसरो ने कहा कि इसके बाद यान को चंद्रमा की सतह से लगभग 100 मिलोमीटर की दूरी पर चंद्र ध्रुवों के ऊपर से गुजर रही इसकी अंतिम कक्षा में पहुंचाने के लिए चार और कक्षीय प्रक्रियाओं को अंजाम दिया जाएगा।

चांद की कक्षा में चंद्रयान के पहुंचने के बाद इसरो प्रमुख के सिवन ने कहा, 'चंद्रयान 2 मिशन ने आज एक अहम पड़ाव पार किया है...सुबह 9 बजे लगभग 30 मिनट की प्रक्रिया के बाद चंद्रयान चंद्रमा की निर्धारित कक्षा में पहुंच गया.. .'साथ ही उन्होंने बताया, 'अगला अहम कदम 2 सितंबर 2019 को इसरो ने चंद्रयान-2 के आर्बीटर से विक्रम लैंडर सफलता पूर्वक अलग कर दिया।...3 सितंबर को लगभग तीन सेकंड की एक छोटी-सी प्रक्रिया होगी, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि लैंडर के सभी सिस्टम सही काम कर रहे हैं...' बेंगलूरु के नजदीक ब्याललू स्थित इंडियन डीप स्पेस नेटवर्क (आईडीएसएन) के एंटीना की मदद से बेंगलूरू स्थित 'इसरो, टेलीमेट्री, ट्रैकिंग एंड कमांड नेटवर्क' (आईएसटीआरएसी) के मिशन ऑपरेशन्स कांप्लेक्स (एम ओएक्स) से यान की स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है। इसरो ने कहा कि अगली कक्षीय प्रक्रिया बुधवार को दोपहर साढ़े 12 से डेढ़ बजे के बीच की जाएगी। देश के कम लागत वाले अंतरिक्ष कार्यक्रम को पंख लगाते हुए इसरो के सबसे शक्तिशाली तीन चरण वाले रॉकेट जीएसएलवी-एमके3-एम1 ने आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा अंतरिक्ष केंद्र से 22 जुलाई को चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण किया था। प्रक्षेपण के बाद चंद्रयान-2 ने गत 14 अगस्त को पृथ्वी की कक्षा से निकलकर चंद्र पथ पर आगे बढ़ना शुरू किया था। इसरो का यह अब तक का सबसे जटिल और सबसे प्रतिष्ठित मिशन है। यदि सब कुछ सही रहता है तो रूस, अमेरिका और चीन के बाद भारत, चांद की सतह पर 'सॉफ्ट लैंडिग' करने वाला चौथा देश बन जाएगा। 'चंद्रयान-2' मिशन भारत

....'चंद्रयान-2' मिशन भारत के लिए इसलिए भी बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि चांद के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में अभी तक कोई देश नहीं पहुंचा है। इससे पहले गत 15 जुलाई को रॉकेट में तकनीकी खामी का पता चलने के बाद 'चंद्रयान-2' का प्रक्षेपण टाल दिया गया था। समय रहते खामी का पता लगाने के लिए वैज्ञानिक समुदाय ने इसरो की सराहना की थी। 'चंद्रयान-2' चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में उतरेगा जहां अभी तक कोई देश नहीं पहुंच पाया है। इससे चांद के अनसुलझे रहस्य जानने में मदद मिलेगी। यह ऐसी नयी खोज होगी जिसका भारत और पूरी मानवता को लाभ मिलेगा।.....

के लिए इसलिए भी बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि चांद के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में अभी तक कोई देश नहीं पहुंचा है। इससे पहले गत 15 जुलाई को रॉकेट में तकनीकी खामी का पता चलने के बाद 'चंद्रयान-2' का प्रक्षेपण टाल दिया गया था। समय रहते खामी का पता लगाने के लिए वैज्ञानिक समुदाय ने इसरो की सराहना की थी। 'चंद्रयान-2' चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में उतरेगा जहां अभी तक कोई देश नहीं पहुंच पाया है। इससे चांद के अनसुलझे रहस्य जानने में मदद मिलेगी। यह ऐसी नयी खोज होगी जिसका भारत और पूरी मानवता को लाभ मिलेगा।

पहले चंद्र मिशन की सफलता के 11 साल बाद इसरो ने भू-स्थैतिक प्रक्षेपण यान जीएसएलवी-मार्क... के जरिए 978 करोड़ रुपये की लागत से बने 'चंद्रयान-2' का प्रक्षेपण किया। स्वदेशी तकनीक से निर्मित 'चंद्रयान-2' में कुल 13 पेलोड हैं। आठ ऑर्बिटर में, तीन पेलोड लैंडर 'विक्रम' और दो पेलोड रोवर 'प्रज्ञान' में हैं। लैंडर 'विक्रम' का नाम भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम ए साराभाई के नाम पर रखा गया है। दूसरी ओर, 27 किलोग्राम वजनी 'प्रज्ञान' का मतलब संस्कृत में 'बुद्धिमता' है। ऑर्बिटर, चंद्रमा की सतह का निरीक्षण करेगा और पृथ्वी तथा 'चंद्रयान-2' के लैंडर 'विक्रम' के बीच संकेत प्रसारित करेगा। लैंडर 'विक्रम' को चंद्रमा की सतह पर भारत की पहली सफल लैंडिग के लिए डिज़ाइन किया गया है। 'प्रज्ञान' नाम का रोवर कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स) संचालित 6-पहिया वाहन है। इसरो के अनुसार चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव रोचक जगह है जहां उत्तरी ध्रुव के विपरीत अंधकार छाया रहता है।

7 सितंबर को चंद्रमा के साउथ पोल पर लैंड करेगा चंद्रयान-2

बेंगलुरु स्थित इसरो मुख्यालय में चेयरमैन डॉक्टर के सिवन ने पहले ही बताया था कि चंद्रयान-2 के लिए अगला अहम चरण 2 सितंबर को होगा जब ऑर्बिटर से लैंडर अलग होगा। इसके बाद हमें दोनों हिस्सों का नियंत्रण करना होगा। ऑर्बिटर से अलग होने के बाद लैंडर चांद के चारों तरफ 100 मिलोमीटर गुणा 30 किलोमीटर की कक्षा में प्रवेश कर जाएगा। अंततः यह 7 सितंबर 2019 को यह चंद्रमा के साउथ पोल के क्षेत्र में प्रवेश करेगा।'

लैंडिंग की अवधि होगी खतरनाक

सिवन ने बताया कि पूरी एक्यूरेसी से काम कर रहे हैं, ताकि चंद्रयान-2 को चंद्रमा के साउथ पोल पर सफलतापूर्वक उतार सकें। उन्होंने कहा, 'जब हम सबकुछ सही पाएंगे तो चंद्रयान-2 को चांद पर उतारने की प्रक्रिया शुरू होगी।' उन्होंने आगे बताया कि 7 सितंबर को प्रातःकाल 1:55 बजे लैंडर चंद्रमा के साउथ पोल पर सतह पर लैंड करेगा। यह लैंडिग के दौरान की अवधि काफी खतरनाक होगी। इसके बाद उन्होंने वहां मौजूद पत्रकारों के सवालों का बेहतरीन और रोचक तरीके से जवाब दिया।

डाटा मिलने का दुनिया को इंतजार

उन्होंने बताया, 'लैंडिंग के 5.5 घंटे बाद पहली तस्वीर मिलेगी। चंद्रयान 2 से डाटा के लिए दुनिया इंतजार कर रही है। साउथ पोलर एरिया के इस लैंडिंग साइट पर पहले कोई मिशन नहीं गया इसलिए दुनिया की नजरें इस पर टिकी हैं। यहां पानी और खनिजों को लेकर विशेष अध्ययन और जानकारियां एकत्रित की जाएंगी।' उन्होंने बताया कि लैंडर से निकलते ही रोवर का कैमरा काम करना शुरू कर देगा। लैंडर से रोवर को निकलने में तीन घंटे का समय लगेगा। साउथ पोल पर लैंडिंग के बाद रोवर मुख्यतः केमिकल कम्पोजिशन का अध्ययन करेगा।

चंद्रयान 2 मिशन पर फिल्म के लिए इसरो की कॉपीराइट

इसरो अध्यक्ष के सिवन से मीडिया ब्रीफ के दौरान एक पत्रकार ने सवाल किया कि चंद्रयान 2 मिशन पर अगर फिल्म बनाने की बात होगी तो क्या इसरो इस पर कॉपीराइट रखता है। इस पर इसरो अध्यक्ष ने हंस कर जवाब दिया कि अभी तक इस बारे में किसी ने संपर्क नहीं किया है।

7 सितंबर को लैंडिंग देखने के लिए पीएम मोदी को आमंत्रण

चंद्रयान 2 की लैंडिंग 7 सितंबर को रात 1.55 पर होगी। इसके साथ ही पावर मिशन शुरू हो जाएगा। इसरो की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चंद्रयान-2 की लैंडिंग देखने के लिए आमंत्रण भेजा गया है। हालांकि, अभी पीएम की ओर से आने की पुष्टि नहीं की गई है।

मिशन का अहम दौर पूराः इसरो

इसरो अध्यक्ष ने बताया, 'मिशन का अहम दौर पूरा हुआ। इसके साथ ही अंतरिक्ष में इसरो ने इतिहास रच दिया। उन्होंने बताया कि आज सुबह 9 बजकर

- *जारी पृष्ठ 6 पर*

अ.भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर "सहयोग" ने किया वस्त्रों का वितरण

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से 1 दिन पूर्व 23 अगस्त को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयेाग से दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग के माध्यम से उन नन्हें-मुन्ने बच्चों को वस्त्र प्रदान किए गए जो कि आनंद विहार के समीप रामप्रस्थ कालोनी में अभावग्रस्त जीवन जी रहे हैं। यह विचित्र विडंबना ही है कि आज भी इस देश में बहुत से बच्चे और उनके अभिभावक निर्धनता में मजबूरी का जीवन जी रहे हैं। उनके पास आज भी मूलभूत जरूरतों की पूति र्का पूर्ण अभाव है। ऐसे मनुष्यों के लिए सहयोग का यह प्रयास अत्यंत सफल सिद्ध हो रहा है। 24 तारीख को जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में मनाया जाना सुनिश्चित था, सब लोग अपने बच्चों के लिए वस्त्र आदि खरीद रहे थे, लेकिन जिनके पास में धन का अभाव है ऐसे लोगों की बेबसी को ध्यान में रखते हुए सहयोग की टीम रामप्रस्थ कॉलोनी में गई और उन्होंने वहां पहले यज्ञ किया और यजमान भी वहीं के लोगों को बनाया। इसके बाद कॉलोनी में घर-घर जाकर कपड़ों का वितरण किया। श्री कृष्ण जन्माष्टमी की पूर्व संध्या पर वस्त्रों की सुंदर भेंट पाकर वहां के सभी लोग और बच्चे बहुत खुश थे। सभी के चेहरों पर त्यौहार की उमंग, उत्साह की चमक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
एवं
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ
के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

दिनांक 11-12-13 अक्टूबर 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

आश्विन शु० 13–14–15 विक्रमी सं० 2076

कार्यक्रम स्थल **रामनाथ चौधरी शोध संस्थान-वटिका**
सुन्दर पुर मार्ग, नरिया, लंका, वाराणसी

आवश्यक सूचना : ★ महासम्मेलन में भाग लेने वाले इच्छुक महानुभाव अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। ★ आर्यसमाजें इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। ★ आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में नि:शुल्क की जाएगी। ★ विस्तृत जानकारी पृष्ठ 5 पर प्रकाशित की गई है।

आर्यजन कृपया ध्यान दें

★ समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों – विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि वैदिक धर्म महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट कर लें।
★ इन तिथियों में कोई भी अपना कार्यक्रम आयोजित न करें।
★ सभी आर्यजन अपना रेलवे रिजर्वेशन तत्काल करा लेवें।
★ सभी आर्यजन महासम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं।
★ आर्यसमाज अपने कार्यक्रम के पत्रकों में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य प्रकाशित करें।
★ सम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्यजन पंजीकरण हेतु अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि लिखकर aryasabha@yahoo.com, अथवा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें।
★ ग्रुप में पधारने वाले आर्यजन ग्रुप लीडर के विवरण के साथ सूची बनाकर भेजें।
★ आर्यजनों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।

महासम्मेलन की सफलता के लिए अपना सहयोग **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम क्रॉस चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें।
यदि आप अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं तो कृपया 9650183339 से संपर्क करें

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सार्वदेशिक आर्य वीर दल जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ समृति न्यास वाराणसी

संपर्क सूत्र - प्रमोद आर्य (8052852321) दिनेश आर्य (9335479095) राजकुमार वर्मा (9889136019)

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के
150वें वर्ष के अवसर पर
स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन
11–12–13 अक्तूबर, 2019 भाग लेने हेतु

वाराणसी यात्रा

आर्यजन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में नि:शुल्क की जाएगी।

दिल्ली एव आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- श्री शिव कुमार मदान (9310474979) श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949) श्री सुनेहरीलाल यादव (8383092581) श्री सुखवीर सिंह (9350502175) श्री सतीश चड्डा (9313013123)

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
मानवमात्र की सहायतार्थ तैयार किए गए मोबाइल एप्प

Was Sardar Bhagat Singh Communist or Arya Samaji?

- Dharmpal Arya

Today, let's understand this ispute of history from the beginning. The great Indian revolutionary and ideologist Sardar Bhagat Singh was hanged on the gallows by the British Government along with his revolutionary colleagues on 23 March 1931. He was such a great thinker and ideologist than even today his ideas and actions are appreciated and celebrated by Indian Community. However, on the contrary the manner in which the alleged historians of the country have represented his beliefs and ideology, is definitely disturbing.

It is often said about Bhagat Singh that he was an atheist, some other person says that he was a Sikh. The third says oh no! he was actually a communist. Amidst all these hollow claims, the real truth is suppressed, which also the family of Sardar Bhagat Singh accepts. It is believed that Bhagat Singh was influenced by the Russian Revolution and it is also true that he wrote an article after a debate with a prisoner Baba Randhir Singh while in jail, "Why am I an atheist", which still cites as Bhagat Singh's writing to prove him a atheist or communist. In actually that article was written by him in a huff. Because there is no such anecdote related to the life of Bhagat Singh that he has ever stayed in the home of any communist or sought any help from communist people.

Actually, Bhagat Singh and his entire family including his grandfather Sardar Arjun Singh, his father Kishan Singh and his two uncles were associated with the Arya Samaj founded by Swami Dayanand Saraswati. He was the originator of this post-1857 revolution along with his disciple Pt. Shyam Ji Krishna Varma, who were also the gurus of the revolutionaries such as Vinayak Damodar Savarkar, Lala Hardayal, Bhai Parmanand, Senapati Bapat, Madanlal Dhingra, etc. These disciples never looked back in the freedom movement. Sri Jayachandra Vidyalankar was the Guide to the revolutionaries in Punjab as well as the professor of history and politics in D.A.V. College Lahore. Sardar Bhagat Singh and his revolutionary companions used to learn on politics from him.

At that time, the freedom movement was at its peak. There was such type of situation at all places that if the patriot revolutionaries require shelter, food, residence then it could be received in Arya samaj or in the house which belongs to Arya Samaji. Other people were so afraid of helping them that they could not have the courage to shelter them. For such reasons, after joining the national movement of revolution, Bhagat Singh stayed at the Veer Arjun office in Delhi along Swami Shradhanand and Pandit Indra Vidyavachaspati.

Not only this, Sardar Bhagat Singh went to Calcutta to buy some necessary chemical for making indigenous bombs to kill the notorious English officer Sanders who ordered lathi charge on Lala Lajpat Rai. This memoir has been given by Bhagat Singh's family member Mrs. Virendra Sindhu in a book "Mrityunjay Purakhe". Later on, this memoir itself was written by an accused and former Member of Parliament of Lahore case that after reaching Calcutta, Bhagat Singh's visit to the market may be suspicious, due to which I was given this responsibility. I went to many shops. Most of the shopkeepers refused to give chemical due to government ban. After this, I went with Bhai Baijnath Singh to some of the shopkeepers who were sympathetic to the Kranti Dal. Among them was a shopkeeper B. Paul who gave us the chemical. We could not decide where we should go after lifting the chemical on the head of a laborer. Finally, both of us reached to Arya Samaj Calcutta. On the second day in the morning, Bhagat Singh, Phanindranath Ghosh (who later became a government witness) and Yatindranath Das together prepared the country gun cotton used in the indigenous bomb. Later, Bhagat Singh left for Agra after taking the remaining gun cotton.

Not only this, even before the assembly bombings, Bhagat Singh went to Calcutta with Durga Bhabhi and also on that day he stayed in the Arya Samaj temple. After this, he went to the kothi of Chhajiuram Ji, the famous trustee of Arya Samaj. The correct introduction of Bhagat Singh was not given to anyone here. Here Bhagat Singh used to tell his name Hari to everyone. This information has been given by Mrs. Virender Sindhu on page number 176 of the book Yugadrashta Bhagat Singh. The popular photograph of Sardar Bhagat Singh wearing hat was also taken during the Calcutta Visit of him.

It is further written in the book that Bhagat Singh was mentally prepared to throw a bomb in the assembly. So, when he left from Calcutta, Sushila Didi decorated his forehead by putting 'tilak' with her blood and the closet under the roof of the Arya Samaj temple had given adieu farewell to this grand hero for an immortal but final wonderful sacrifice of life.

Now, this natural question arises from here that when Bengal was the seat of Marxism at that time and Calcutta also had houses and offices of the big left comrades and communists of the country, but Sardar Bhagat Singh Ji never met these people and neither did they go here. Why? The simple answer to this is that Bhagat Singh was not a communist rather he a pure Arya Samaji like his Arya family. He knew that the intoxication of selflessness and indigenous devotion lies only in the Arya Samaj. Yes, like people associated with Arya Samaj, he did not believe in superstition, idolatry, hypocrisy and, because of this, some people considered him an atheist.

- President
Delhi Arya Pratinidhi Sabha

प्रथम पृष्ठ का शेष

60 दिवसीय धर्म प्रचारक प्रशिक्षण.....

संप्रदायों के प्रचार प्रसार में पूरी तकनीकि सुविधाओं के साथ रात दिन लगे हुए हैं। इसलिए आर्य समाज को भी अपनी पूरी शक्ति के साथ वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार और आर्यसमाज का विस्तार करना ही होगा। इसी भावना और कामना को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प की योजना का निर्माण किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारकों को प्रचार कार्य क्षेत्र में उतारने से पूर्व द्विमासिक 60 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के प्रथम चरण का शुभारम्भ 2 सितंबर से 8 सितंबर 2019 से आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के प्रांगण में आयोजित किया। आर्यसमाज के उत्थान और विस्तार के लिए वैदिक धर्म प्रचारकों के निर्माण हेतु यह प्रशिक्षण शिविर चार चरणों में आयोजित होगा। रचनात्मक शिविर पूर्ण रूप से आवसीय है। शिविर का उदघाटन 2 सितंबर 2019 को प्रत:काल यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य भी उपस्थित रहे। इस शिविर में 10 प्रचारक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इस प्रचारक प्रकल्प का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानंद की शिक्षाओं से अवगत कराना है, साथ ही आर्य समाज के प्रचार कार्य के माध्यम से सक्रियता प्रदान करना, स्कूलों में वैदिक ज्ञान व शारीरिक व्यायाम द्वारा चरित्र निर्माण और आर्यवीर दल की शाखाओं का संचालन कर आज की युवा पीढ़ी को आर्यसमाज से जोड़ना, गरीब परिवारों एवं झुगी-झोपड़ियों में जाकर यज्ञ करना इत्यादि है।

शिविर में प्रचारकों को यज्ञ प्रशिक्षण, वैदिक धर्म की मान्यताओं और सिद्धांतों से अवगत कराया जा रहा है, त्रैतवाद, सृष्टि के आदिकाल से वर्तमान तक आर्यों की व्यवस्था, विभिन्न संप्रदायों के मतों के विषय में जानकारी, आर्य समाज के स्वर्णिम इतिहास से अवगत कराना, भारत की स्वतंत्रता में आर्य समाज का योगदान, राष्ट्रसेवा-मानवसेवा, व्यक्तित्व विकास, व्यवहार, विभिन्न विषयों पर सामूहिक चर्चा (Group discussion), ईश्वर-यज्ञ-संगठन-स्वामी दयानंद क्रांतिकारियों -आर्य समाज-वैदिक धर्म इत्यादि से संबंधित भजनों एवं गीतों को बोलने का अभ्यास, शुद्ध मंत्र उच्चारण, प्रचार कार्यों को किस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है, कार्यक्रमों की व्यवस्थाओं को बनाना, इत्यादि विभिन्न विषयों पर चर्चा कर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण सत्र प्रात:काल साढ़े चार बजे से रात्रि दस बजे तक चलता है। इस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण सत्र में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य व महामंत्री श्री विनय आर्य एवं प्रचारक डॉ. सर्वेश वेदालंकार द्वारा प्रतिदिन उपरोक्त विषयों से संबंधित कक्षाएं लेकर प्रचारकों को तैयार कर रहे हैं। सभा इन प्रचारकों को आर्य समाज का प्रचार करने के लिए पूर्णकालिक प्रचारकों के रूप में तैयार कर रही है। इन सभी प्रचारकों को प्रचारक प्रकल्प के अन्तर्गत प्रचार कार्य को गति देने हेतु विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाएं प्रदान करेगी। शिविर के प्रथम चरण का समापन 8 सितंबर को होगा। - ***बृहस्पति आर्य***

पृष्ठ 4 का शेष

चन्द्रयान -2 की सफल यात्रा...

2 मिनट पर चंद्रयान 2 चंद्रमा की कक्षा में स्थापित हो गया अब यह 7 सितंबर को चांद की सतह पर उतरेगा।'

तमाम तरह के सवालों का इसरो अध्यक्ष से हंसकर दिया जवाब

मीडिया ब्रीफिंग के दौरान इसरो अध्यक्ष के सिवन से तमाम तरह के सवाल पूछे गए, जिसका उन्होंने बड़ी ही आसानी से जवाब दिया। साथ ही, उन्होंने मिशन से जुड़ी सभी जानकारियों को शेयर किया। 15 दिनों बाद पेलोड वापस काम करने के सवाल पर अध्यक्ष ने शंका जताई। स्पेसक्राफ्ट के हेल्थ के बारे में उन्होंने कहा कि सब बढ़िया है।

इसरो की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार, चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश के बाद चंद्रयान 2 की गति धीमी हो जाएगी। साथ ही, ऑनबोर्ड प्रपल्शन सिस्टम को फायर किया जाएगा, ताकि यान चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव में आ सके। इसरो के अध्यक्ष ने जानकारी दी थी कि चंद्रयान-2 के चंद्रमा की कक्षा में पहुंचने के बाद इसरो कक्षा के अंदर स्पेसक्राफ्ट की दिशा में पांच बार बदलाव करेगा। इसके बाद यह चंद्रमा के ध्रुव के ऊपर से गुजरकर उसके सबसे करीब-100 किलोमीटर की दूरी की अपनी अंतिम कक्षा में पहुंच जाएगा। इसके बाद विक्रम लैंडर 2 सितंबर को चंद्रयान-2 से अलग होकर चंद्रमा की सतह पर उतरेगा।

आर्यसमाज की ओर से सभी सुयोग्य वैज्ञानिकों और देशवासियों को अग्रिम बधाई। - ***आचार्य अनिल शास्त्री***

मध्य प्रदेश में प्रथम कन्या गुरुकुल का शुभारंभ

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल का शुभारंभ 15 सितम्बर 2019 रविवार को होने जा रहा है। यह कन्या गुरुकुल मध्य प्रदेश का प्रथम कन्या गुरुकुल है। इसकी पाठ्यक्रम व्यवस्था पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी के नेतृत्व एवं निर्देशन में होगी। लगभग 2 करोड़ की लागत से निर्माणाधीन भवन का एक भाग निर्मित हो चुका है। इसका शुभारंभ सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय सुरेशचन्द्रजी आर्य के कर कमलों से 15/9/2019 रविवार को प्रात: 11 बजे से प्रारंभ आयोजन में होगा।

गुरुकुल स्थल : सारंगपुर-आगर राज मार्ग पर ग्राम मोहन बड़ोदिया। सारंगपुर से 8 किलोमीटर दूर। **पहुच मार्ग :** उज्जैन से आगर होते हुए मोहन बड़ोदिया पहुंचे।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाज की ऐतिहासिक घटनाएं

आर्यसमाज का इतिहास घटनाओं का इतिहास है। आर्यसमाज के इतिहास को बनाने में आर्यसमाजी बने व्यक्ति के साथ घटित घटनाओं का विशेष योगदान रहा है। आपके आर्य परिवार में भी किसी ऐतिहासिक घटना का होना सम्भव है।

अत: आप सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि यदि आपके परिवार सदस्य के आर्य बनने अथवा किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित के साथ ऐतिहासिक घटना घटित हुई हो या कोई ऐसी घटना जिसे आप आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐतिहासिक समझते हों और आपकी जानकारी में हों, हमें भेजने की कृपा करें। आपकी ऐतिहासिक घटना को आर्यसन्देश साप्ताहिक में जनसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाएगा। - *सम्पादक*

आवश्यकता

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा चलाए जा रहे आदिवासी क्षेत्रों में C.B.S.E. पैटर्न के विद्यालयों के कुशल संचालन एवं प्रबंधन के लिए निम्न पदों हेतु आवेदन आमंत्रित हैं:-

प्रधानाचार्य, विद्यालय प्रबंधक, मुख्याध्यापक, प्रशासनिक अधिकारी, हॉस्टल प्रबंधक, योग अध्यापक, धर्म शिक्षक।

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक तथा विद्यालय प्रशासन से सेवा निवृत्त कार्यकर्ता भी आवेदन कर सकते हैं। सेवाभाव तथा राष्ट्र उत्थान कार्य में इच्छुक व्यक्ति अवश्य संपर्क करें। पति-पत्नी दोनों कार्य करना चाहे तो प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव अपना आवेदन विस्तृत बायोडाटा सहित cbse.daps@gmail.com ईमेल करें।

- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री

माता-पिता और आचार्य ही बच्चों के निर्माता हैं - स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

गुरुकुल पूठ-गढ़मुक्तेश्वर में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

30 अगस्त, गढ़मुक्तेश्वर। माता-पिता और आचार्य ही बच्चे के सच्चे निर्माता हैं, ये तीनों ही सच्चे गुरु हैं और संस्कारों के शिल्पी हैं बालक के जन्म से ही मां अपने पुत्र को यशस्वी-वर्चस्वी-तेजस्वी-विद्वान्-बलवान् और धर्मात्मा बनाने के लिए जो तपस्या करती है, वह तपस्या किसी जंगल में बैठे हुए तपस्वी साधु-सन्तों की तपस्या से ऊंची और श्रेष्ठ होती है। क्योंकि इसमें समस्त परिवार और राष्ट्र की धरोहर को तैयार किया जाता है। यह गुणात्मक तब होती है जब पिता भी मिलकर उसमें सहयोग करता है, वह भी सदैव अपने पुत्र को आकाश से ऊंचा देखने की कल्पना संजोये रहकर अच्छे संस्कारों को पानी देता रहता है और आचार्य उस संस्कार की खेती की शुद्धि तथा उसमें खाद डालकर उसे ऊर्जावान् बनाता है। ये विचार गंगा के पवित्र किनारे पर चल रहे गुरुकुल पूठ की पवित्र यज्ञशाला में "सामवेद पारायण यज्ञ" पर आहुतियां प्रदान करने के बाद अपने भक्तों एवं शिष्यों को सम्बोधित करते हुए गुरुकुल के संस्थापक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने दिए।

स्वामी जी ने आगे कहा-महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्वप्न था कि सारा विश्व श्रेष्ठ आचार-विचारों से युक्त हो उसके लिए ऋषिवर ने वैदिक संस्कारों

को बहुत महत्व प्रदान किया। इसीलिए गुरुकुल शिक्षा की व्यवस्था का विधान बनाया इसीके लिए परिवारों में पांच यज्ञों की दिनचर्या को अनिवार्य किया और बचपन से ही राष्ट्र निर्माण की तैयारी का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने कहा कि यदि इस विधि से समाज में भावी पीढ़ी को संस्कार दिये जायें तो आने वाले 20 वर्षों में हम भारत को विश्व गुरु की पदवी पर प्रतिष्ठित कर सकते हैं। हमारे प्रधान/मंत्री गृहमंत्री जी का स्वप्न भी तभी साकार होगा। ब्र. नमन को उसके जन्मदिन पर अपना शुभ आशीर्वाद प्रदान करते हुए स्वामी जी ने उसके सद्गुणों के विकास के लिए आचार्यों को प्रेरणा प्रदान की तथा सभी ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद दिया। सामवेद यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार 1 सि. को प्रात: 10 बजे हुई, जिसमें पूरे प्रदेश से भारी संख्या में सभी यज्ञ प्रेमी उपस्थित हुए। वेद पाठ ब्र. आनन्द-चेतन-विश्वबंधु-लवकुश और अमित आर्य ने किया। प्राचार्य संजीव जीआचार्य दिनेश, सुधीर, सन्दीप और कुलदीप, मुकुल, हर्षकुमार, रवीन्द्र, मदान जी प्रदीप शामली आदि-आदि ने आहुतियां प्रदान की। कार्यक्रम व्यवस्था में राघव जी, महेश आर्य, विनय आर्य आदि ने सहयोग किया।

-प्रबन्धक

श्रावणी एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समापन समारोह

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी एवं जन्माष्टमी समारोह का समापन समारोह 8 सितम्बर तक आयोजित होगा। - *मन्त्री*

गुरुकुल प्रभात आश्रम के तीरंदाजों ने लहराया परचम

बुलन्दशहर (उ.प्र.) में आयोजित दसवीं तीरंदाजी राज्य स्तरीय कनिष्ट वर्ग की द्विदिवसीय प्रतियोगिता में गुरुकुल प्रभात आश्रम के चार तीरंदाजों ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान के साथ 10 में से 8 स्वर्ण तथा 4 रजत पदक और दो कांस्य पदक अपनी झोली में डाले। ब्र. चन्द्रबिन्द ने तीन स्वर्ण और एक कांस्य, ब्र. नचिकेता ने दो स्वर्ण और तीन रजत, ब्र. पारस ने दो स्वर्ण और एक कांस्य तथ ब्र. राहुल ने एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक प्राप्त किए। 19 अगस्त को गुरुकुल पहुंचने पर सभी धनुर्धर ब्रह्मचारियों का स्वागत किया गया। सितम्बर मास में आन्ध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में आयोजित राष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश की ओर से चयनित किया गया है। - *आचार्य*

आर्यसमाज के भजनों के संग्रह हेतु - आवश्यक सूचना

यह सर्वविदित है कि आर्य समाज के भजन सारगर्भित और भावपूर्ण होते हैं। इसके लिए भजनों के लेखकों और मधुर भजन गायकों को बहुत-बहुत बधाई। भजनों का आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य जगत् के सभी भाषाओं के भजनोपदेशकों और भजन लेखकों से अनुरोध है कि आप अपने मधुर भजनों की रिकार्डिंग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को ईमेल पर भेजकर वैदिक धर्म-संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसर में सहयोग प्रदान करें। दिल्ली सभा का प्रयास है कि विश्व भर में आर्य समाज के भजनोपदेशकों के भजनों को संग्रहीत कर सुरक्षित किया जाए। जिससे आर्य समाज की आने वाली पीढ़ियां भी मधुर भजनों का श्रवण करें और प्रेरणा प्राप्त करके आगे बढ़े।

कृपया अपने भजन सीडी/डी.वी.डी/पैन ड्राइव के माध्यम से '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें अथवा **9540045898 पर व्हाट्एप्प** करें। - *महामन्त्री*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ	
● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	50 रु.	30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	80 रु.	50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
स्वाध्याय प्रेमियों के लिए
365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें
वैदिक विनय
20% छूट के साथ मात्र 120/- रुपये में

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 सितम्बर, 2019 से रविवार 8 सितम्बर, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5-6 सितम्बर, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 सितम्बर, 2019

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्री सतीश चड्डा महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा व राष्ट्र व्यवस्थापक आदि महानुभाव सम्मिलित रहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी विवेकानंद जी ने आर्य युवक युवतियों और उनके अभिभावकों सहित उपस्थित आर्य जनों को संबोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने समान गुण, कर्म, स्वभाव वाले युवक-युवतियों के बीच परस्पर विवाह संबंधी विचार प्रस्तुतत किए हैं। ये परिचय सम्मेलन उसी दिशा में कार्य कर रहे हैं।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने उपस्थित युवक-युवतियों एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलनों के प्रति आर्य परिवारों में रूझान बढ़ा है और हम इसे ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो आज पहले की अपेक्षा अधिक संख्या में युवक-युवतियां पूरे देश से सम्मिलित हो रहे हैं जिसके परिणाम स्वरूप आर्य परिवारों में रिश्ते बढ़ रहे हैं।

इस 23 वें परिचय सम्मेलन में 22 लड़कियों तथा 18 लड़कों ने अपना पंजीकरण कराया। अधिकतर युवक-युवतियां व उनके अभिभावक, किसी के साथ 1, किसी के साथ 2 भी कार्यक्रम में उपस्थित हुए। बहुत ही उल्लास, उमंग और उत्साह का वातावरण था। जिसमें कहीं भी किसी भी किस्म की हिचकिचाहट या घबराहट नहीं थी। बच्चों को बहुत ही अच्छा लग रहा था जैसे वे अपने स्वयंबर की तैयारी करने आये हैं। अभिभावक व युवक-युवती दिल्ली, हरियाणा व उत्तरप्रदेश के विभिन्न भागों से पधारे हुए थे। श्री अर्जुन देव चडडा, राष्ट्रीय संयोजक ने परिचय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि जातपात से ऊपर उठकर भेदभाव रहित समाज के निर्माण में इस प्रकार के परिचय सम्मेलन की बड़ी सार्थक भूमिका रहती है। उन्होंने उपस्थित युवक-युवतियों से कहा कि बिना दहेज के विवाह का संकल्प लें।

कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री सतीश चड्डा, अर्जुन देव चड्डा, श्रीमती वीना आर्या जी ने किया। परिचय सम्मेलन के मंच पर आकर युवक- युवतियों ने उत्साह व आत्मविश्वास के साथ परिचय दिया। कुछ अभिवाकों ने भी अपने पुत्र एवं पुत्रियों का बायोडाटा मंच पर आकर सबके सामने बताया। 23वें परिचय सम्मेलन के इस अवसर पर युवक-युवतियों के फोटो युक्त बायोडाटा की विवरणिका पुस्तक का प्रकशन किया गया जो कि सभी को नि:शुल्क वितरित की गई।

आर्य युवक-युवतियों के रिश्तों को आगे बढ़ाने में सहयोग के लिए मेल मिलाप समिति के सदस्यों ने सक्रिय सहयोग किया। कार्यक्रम स्थल पर पूछताछ, तत्काल रजिस्ट्रेशन, विवरणिका वितरण के लिए पृथक-पृथक काउण्टर लगाये गए थे। सुबह से ही लोगों का रजिस्ट्रेशन के लिए आना प्रारंभ हो गया था।

सम्मेलन में प्रतिभागियों के लिए अलग-अलग रंग के बेज की व्यवस्था की गई थी। आर्य समाज आदर्श नगर के प्रधान श्री रवीन्द्र बत्तरा जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्डा जी ने 15 अगस्त 2019 को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आहवान (प्लास्टिक से मुक्ति) के अभियान को गति प्रदान करने हेतु कपड़े के सुंदर थैले वितरित कर विशेष अभियान की शुरूआत की। सम्मेलन का समापन शांतिपाठ के साथ हुआ। सम्मेलन के उपरांत आर्य समाज आदर्श नगर द्वारा सभी के लिए भोजन-चाय-नाश्ते की व्यवस्था की गई थी। संपूर्ण व्यवस्था में श्री प्रवीण बत्तरा मंत्री आर्य समाज आदर्श नगर का विशेष योगदान रहा। बड़े ही संतोष जनक वातावरण में यह रचनात्मक कार्यक्रम संपन्न हुआ।

- अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक

प्रतिष्ठा में,

एकरूपीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आरम्भ

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा किया गया एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य के सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन साक्षी रहे। यज्ञ का यह अनुपम दृश्य आर्य समाज के इतिहास में एक महान कीर्तिमान है। इस क्रम में भविष्य में भी ऐसे वृहद यज्ञ के आयोजन हेतु दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण देने के लिए विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के अधिकारीगण योजना बनाए और सामूहिक रूप से विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण की कक्षाओं का आयोजन करें। इसके लिए सभा की ओर से प्रशिक्षक की भी व्यवस्था की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

- सतीश चड्डा, महामंत्री,
आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, मो. 9313013123

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह